**International Research Vision (Int. Res. Vn.)**
*A Peer Reviewed Multidisciplinary Biannual Research Journal*
**ISSN: 2454-3721**
**Volume 6 Issue 2: 33-36, 2020**
**Available online http://www.bioglobia.in**

# युवा वर्ग में बेरोजगारी के कारण एवं बेरोजगारी को दूर करने के उपाय का सर्वेक्षात्मक अध्ययनः दरभंगा जिला के सन्दर्भ में

**ममता झा**
गृह विज्ञान विभाग, आर0 बी0 जालान बेला कॉलेज, बेला दरभंगा – 846005, बिहार
**Aauthor's e-mail: dr.prof.mamta.jha@gmail.com**

**Received: 20.07.2020** **Revised: 12.08.2020** **Accepted: 24.08.2020**

## सारांश

*"बुभुक्षितः किं न करोति पापम्, क्षीणा नराः निष्करूणाः भवन्तिः।"*

*भूखा मनुष्य क्या नहीं करता, धन से क्षीण मनुष्य दयाहीन हो जाता है उसे कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का विवेक नहीं होता है। वही दशा आज के युग में विद्यमान हैं चारों ओर चोरी–डकैतियों की घटनायें, छीना–झपटी, लूट–पाट और कत्ल के हृदय विदारक समाचार सुनाई पड़ते हैं। कहीं बैंक–खजाने लूटने का समाचार अखबार में छपा हुआ मिलता है, तो कहीं गाड़ियों को रोकने व लूटने के हालात समाचार–पत्रों में पढ़ने के लिए मिलते हैं। आज चारों ओर उपद्रव और हड़तालें हो रहीं है। मनुष्य के जीवन से आनंद और उल्लास का अभाव हो चला है। उसे अपनी और अपने परिवार की रोटियों की चिन्ता सता रही है। चाह उनका उपार्जन सदाचार से हो या दुराचार से। आज चाहे कुदाली चलाकर रक्त स्वेद सिक्त रोटियाँ खाने वाले श्रमिक हों, चाहे अनवरत बौद्धिक विवेक वाले स्वास्थ्य के शत्रु विद्वान सभी बेकारी और बेरोजगारी के शिकार बने हुए है। निरक्षर तो कसी तरह अपना पेट भर भी लेते हैं, परन्तु पढ़े–लिखे की आज बुरी हालत है। आज डिग्रीयाँ तो मिल जाती है, पर वे शिक्षित बेरोजगार कैसे जीवन चलाएँ, यह आज की बड़ी कठिन समस्या है। आज हम स्वतंत्र अवश्य हैं, परन्तु अभी आर्थिक दृष्टिकोण से हम पूर्णतया सुखी और समृद्ध नहीं है। एक सुखी और सम्पन्न हैं, तो पचास दुखी और दरिद्र हैं, जिनका जीवन स्तर गिरा हुआ है। ऐसी बात नहीं है कि स्वतंत्र भारत में ही यह कोई नया जादू हो गया हैं यह समस्या भारतवर्ष में भी बहुत दिनों से चली आ रही है। द्वितीय महायुद्ध पूर्व बेरोजगारी की समस्या विद्यमान थी, परन्तु महायुद्ध इस बेरोजगारी के अभिशाप के लिये वरदान बनकर आया और सभी श्रेणियों के लोगों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य मिला। सबको पेट भर रोटियाँ मिलने लगीं, परन्तु युद्ध समाप्त होते ही युद्ध–सम्बन्धी विभिन्न कार्यों में लगे हुए लोग फिर से बेकार हो गये। भारतवर्ष में बेरोजगारी की समस्या फिर से छा गई और अब तो यह समस्या अपनी चरम सीमा पर है।*

शोध बिन्दुः *युवा वर्ग, बेरोजगारी, आर्थिक दृष्टिकोण, अभिशाप, विकासोन्नमुख ।*

## शीर्षक विश्लेषण

शीर्षक को विभिन्न उप–शीर्षकों में विभाजित कर विश्लेषण किया गया है [1–5]।

## बेरोजगारी के कारण

### उचित शिक्षा का अभावः

बेरोजगारी का लोमहर्ष चरमोत्कर्ष तो उस समय दिखाई पड़ा, जब रूड़की विश्वविद्यालय में पूर्ण प्रशिक्षित इन्जीनियर्स को उपाधि प्रदान हेतु 1967 के दीक्षान्त समारोह में भारतवर्ष की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ज्योहिं भाषण देने खड़ी हुई, त्योंहि एक बेरोजगार इन्जीनियर ने खड़ा होकर समवेत स्वर में कहा कि–''हमें भाषण नहीं, नौकरी चाहिए।'' प्रधानमंत्री के पास उस समय कोई उत्तर नहीं था। इतने बड़े विकासोन्नमुख देश में बेरोजगारी की यह भाषण समस्या एक लज्जाजनक बात थी। इसके बाद तो अनेक इन्जीनियरिंग कॉलेजों के दीक्षान्त समारोह में इस प्रकार का वाक्–आऊट हुआ। एक समय था, जब पण्डित नेहरू कहा करते थे– ''हमें देश के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी विशेषज्ञ चाहियें'' वास्तव में

इस देश में तकनीकी विशेषज्ञों की यह दुर्दशा थी। परन्तु आज स्थिति भिन्न है। हमारी विवेकशील सरकार के प्रयासों से अब यह समस्या हल होती जा रही है। इस बेरोजगारी की दौड़ में अध्यापक भी पीछे नहीं रहे। पिछले कुछ वर्षो से प्रशिक्षित अध्यापकों को घर बैठना पड़ता है और उन्हें एक लंबी अवधि तक नौकरी नहीं मिलती। शिक्षित व्यक्तियों की बेरोजगारी का मुख्य कारण उचित शिक्षा व्यवस्था का अभाव है। यह बड़े दुःख की बात है कि लोग अपनी शिक्षा में इतना समय और पैसा बर्बाद करते हैं, फिर भी उन्हें काम नहीं मिलता। इस बेरोजगारी का सारा दोष शिक्षा व्यवस्था का हैं वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में व्यवसायिक और औद्योगिक शिक्षा का काफी अभाव है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था–''प्रति वर्ष नौ लाख पढ़े–लिखे लोग नौकरी के लिए तैयार हो जाते हैं, जबकि हमारे पास खाली नौकरियाँ शतांश के लिए भी नहीं है। हमें बी0ए0 नहीं चाहिए वैज्ञानिक और टेक्नीकल विशेषज्ञ चाहियें।''

वर्त्तमान युग में शिक्षा के द्वार सभी के लिए खुले हैं। बिना उपर्युकत योग्यता के विद्यार्थी वैज्ञानिक, इन्जीनियर और अध्यापक बनने के लिए प्रयत्नशील हैं। इतना हीं नहीं उँचे प्रशिक्षण प्राप्त तकनीकी–विशेषज्ञ भी नौकरी तलाश करता है, क्योंकि वह स्वयं धनाभाव के कारण कोई फैक्टरी नहीं चला सकतौ।

**उद्योग धंधों को भुलाया जाना :**

प्राचीन काल में हमारे जिला के घर–घर में कुछ न कुछ उद्योग धन्धा चलता था। कहीं कपड़े बुने जाते थे, तो कहीं चरखा काता जाता था, कहीं गुड़ बनाया था, तो कहीं खिलौने। इसी प्रकार के हजारों छोटे–छोटे गृह उद्योग से लोग अपना–अपना जीविकोपार्जन करते थे। परन्तु अँगेजों ने अपने देश की व्यापारिक समृद्धि के लिए यहाँ के गृह–उद्योग को नष्ट किया व ढ़ाका और चन्देरी आदि के कारीगरों के हाथ तक कटवा दिये। हम स्वयं मशीनों के बाहुल्य के कारण अकर्मण्य हो गये। बड़ा आदमी बनने की इच्छा तीव्रतर हो उठी। हममें आत्मनिर्भरता समाप्त हो गई। हम परमुखपेक्षी बन गये।

**बढ़ती हुई जनसंख्या :**

हमारे जिला की दिनों–दिन बढ़ती जनसंख्या बेरोजगारी की समस्या को और भी बढ़ा रही है। साधन की सुविधाएँ और उत्पादन तो वही रहा, परन्तु उपभोक्ता अधिक हो गये। घर में कमाने वाला तो एक रहा, पर खाने वाले अनेक हो गए। अनेकों अप्राकृतिक उपायों के बावजूद भी जनसंख्या बढ़ती रही है। यही बढ़ती हुई जनसंख्या बेरोजगारी की समस्या को सुलझाने में भयंकर विध्न उपस्थित कर रही है। इसे रोकने के लिए सरकार की ओर से भी बहुत प्रयत्न किये जा रहे हैं।

**झूठा स्वाभिमान :**

क्या कारण है कि मनुष्य भूखे मरना पसन्द करता है, परन्तु खोमचा लगा कर चाट बेचना या मजदूरी करना पसन्द नहीं करता? बाबूजी लोग रात को चोरी में शामिल हो सकते हैं, डकैती में शामिल हो सकते हैं, परन्तु दिन में मजदूरी की धूल मुँह पर नहीं पड़ने देना चाहते। कहते हैं कि दुनिया कहेगी पढ़–लिखकर खोमचे में चाट बेच रहा है। यही मिथ्या–स्वाभिमान मनुष्य को कुछ करने नहीं देता। पढ़ना–लिखना तो व्यापार या मजदूरी करने को मना तो नहीं कर दियां इसी मिथ्या–स्वाभिमान ने भारतवर्ष में अनेक कुरीतियों को जन्म दिया है।

**समाजिक तथा धार्मिक मनोवृति :**

हमारे जिला में समाजित व धार्मिक परम्परायें भी बेकारी की समस्या को प्रोत्साहित करती है। साधु–सन्यासियों को भिक्षा देना पुण्य समझा जता है। बहुत से आलसी और अकर्मण्य हृष्ट–पुष्ट शरीर वालों ने भी इसे एक व्यवसाय बना रखा है। भिक्षा न देना, पाप समझा जाता है। अतः दानियों की उदारता पर मुग्ध होकर बहुत से स्वस्थ व्यक्ति भी भिक्षावृति पर उतर आते हैं। इस प्रकार बेकारों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। दूसरी बात यह है कि हमारे यहाँ सामाजिक नियम भी कुछ ऐसी ही है, जैसे–वर्ण व्यवस्था के अनुसार विशेष–विशेष वर्गो के लिए विशेष–विशेष कार्य हैं, यदि वह मिले, तो बेचारा करे। अन्यथा हाथ पर हाथ रखकर घर में बैठा रहे। यह सामाजिक व्यवस्था भी बेकारी को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही है। बेरोजगारी के कारण युवाओं में आक्रोश और असन्तोष ने समाज में

अव्यवस्था और अराजकता की स्थिति पैदा कर दी है। समाज में नियम और नागरिक–कर्त्तव्य समाप्त होते जा रहे हैं। यदि इस भयानक समस का समाधान शीघ्र ही न निकला, तो देश की सामाजिक स्थिति और अधिक भयावह हो जाएगी।

## बेरोजगारी को दूर कने का उपाय

### शिक्षा पद्धति में सुधार :

बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए हमें अपनी शिक्षा–पद्धति में परिवर्तन करना होगा। सैद्धान्तिक–शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करना होगी। सैद्धान्तिक शिक्षा से काम नहीं चल सकता। शिक्षा व्यवहारिक होनी चाहिए। प्रारम्भ से ही विद्यार्थियों में स्वावलम्बन की भावना भरनी चाहिए। अन्य देशों में विद्यार्थी कमाते भी हैं और पढ़ते भी हैं। इसलिए उन्हें भावी जीवन में कोई कठिनाई नहीं उठानी पड़ती। हमारी लोकप्रिय सरकार ने ऐसे शिक्षा केन्द्रों का प्रबंध किया है और उनमें इस प्रकार के प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं, जिससे भारतीय नवयुक स्वावलम्बी और आत्मकेन्द्रित बनें [6,7]।

### उद्योग धन्धों का विकास :

विदेशी सरकार ने अपनी साम्राज्यवाद की लालसा में भारतवर्ष के उद्योग–धन्धों को नष्ट कर दिया। हमें उन्हें विकसित करना चाहिए। सूत कातना, कपड़े बुनना, शहद तैयार करना, कागज तैयार करना जैसे लघु–उद्योगों को हमें पुनः विकसित करना चाहिए। उचित व्यवस्था के अभाव के कारण गाँव के बड़े–बड़े कारीगर आज बेकार हो रहे हैं।

### जनसंख्या में वृद्धि पर रोकः

जनसंख्या की वृद्धि रोकने से भी बेरोजगारी की समस्या कुछ न कुछ सुलक्षेगी ही। इस बढ़ती हुई जनसंख्या को रोकने के तीन उपाय है, प्रथम मनुष्य को आत्मसंयम से रहना चाहिये। देश के कल्याण के लिए देशवासियों को इन्द्रिय–सुखों में कमी लानी चाहिए। दूसरा, संतति निग्रह की औषधियाँ और तीसरा विवाह की आयु का नियम द्वारा निर्धारण होना चाहिए।

### अकर्मण्यता का अन्तः

आज हम भारतीय कुछ अकर्मण्य और आलसी भी हो गये हैं। परिश्रम करने को कोई तैयार नहीं है, सभी सरल से सरल काम करना चाहते हैं। कठिन परिश्रम कोई करना चाहता। उद्योग और अध्यवसाय जैसी कोई वस्तु आजकल नहीं रही है। अतः अपनी इच्छानुकूल काम न मिलने के कारण लोग बेकार रहने लगे हैं।

### ग्राम विकास तथा कृषि सुधार :

बेरोजगारी की समस्या जितनी शहरवासियों के सामने है, उससे अधिक गाँव वालों के सामने भी है। भारत गाँवों का देश है। यहाँ का कृषक वर्षा पर आश्रित रहते हैं। वर्षा के अभाव में अन्नोत्पादन सम्भव नहीं है। कुटीर–उद्योग धंधों की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे कृषक अपने अवकाश के समय में कोई अन्य कार्य कर सकें। इससे देश की आर्थिक–व्यवस्था दृढ़ होगी। गाँव में रहनेवालों को गाँव छोड़कर नगर में नहीं जाना चाहिये, इससे बेरोजगारी और बढ़ती है। इस पर भी नियंत्रण लगना चाहिए। आजकल चकाचौध की इस दुनिया में हजारों गाँवों में रहने वाले लोग शहरों में आकर बसते जा रहे हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या में वृद्धि हो रही है।

## निष्कर्ष

हमारी राष्ट्रीय सरकार ने इस समस्या को सुलझाने के लिये काफी ठोस कदम उठाये हैं। स्नातक बेरोजगारों को भारत सरकार राष्ट्रीयकृत बैंको से सरल किश्तों पर बीस हजार का ऋण दे रही है, जिससे वे अपना स्वतंत्र उद्योग स्थापित कर सकें। सरकार ने स्वयं भी हजारों नये बड़े–बड़े उद्योग स्थापित किये हैं, जिनमें बेरोजगारों को लगाया जा सके। जो शिक्षित बेरोजगार कृषि में रूचि रखते हैं, उन्हें खाद–बीज एवं अन्य यंत्रों के लिए बैंको से ऋण की सुविधा उपलब्ध करायी गई है। यह सब 20 सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रधानमंत्री राजीव गांधी की प्रेरणा का फल था। पंचवर्षीय योजनाओं से किसानों की स्थिति में सुधार के लिए सरकार प्रयत्नशील है। देश निरन्तर आगे बढ़ रहा है। आशा है

कि निकट भविष्य में शीघ्र हीं भारत से बेरोजगारी की समस्या दूर हो जायेगी। इसमें तनिक सन्देह नहीं है कि भारत वर्ष में बेरोजगारी की समस्यायें बहुत कुछ हद तक सुलझायी जा चुकी है।

## संदर्भ सूची


1. फी, जॉन दर्पण और गुस्ताव 1964, श्रम अधिशेष अर्थव्यवस्था के विकास : रनिस सिद्धांत और नीति। होमवुड आईएल : रिचर्ड ए डरविन इंक
2. योजना आयोग 1970, बेरोजगारी पर विशेषज्ञों की समिति की रिपोर्ट अनुमान, नई दिल्ली : भारत सरकार।
3. कृष्णा राज 1976, ''ग्रामीण बेरोजगारी के लिए अवधारणाओं और अनुमान के एक सर्वेक्षण भारत डेवलपमेंट स्टडीज, त्रिवेन्द्रम, कृष्ण राज में पुर्नप्रकाशित की कन्द्र : चयनित लेखन, एड. बी. कृष्ण 1995, दिल्ली : ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. योजना आयोग 2001, रोजगार के अवसर पर टास्ट फोर्स की रिपोर्ट, नई दिल्ली : भारत सरकार।
5. योजना आयोग 2002, विशेष समूह के दस लाख का समुह निर्धारण पर रिपोर्ट प्रति वर्ष से अधिक रोजगार के अवसर दसवीं योजना अवधि, नई दिल्ली : सरकार भारत का।
6. उन्नीस जिमोल और उमा रानी 2005, ''भारत में गृह आधारित कार्यः एक गायव निर्भरता? सातत्य'' पेपर सं0–160, गुजरात संस्थान के विकास कार्य अनुसंधान।
7. पपोला, टीएस 2006, ''भारत में बेरोजगार रूझान'' इस मात्रा।